(नियमसार प्रवचन, पृष्ठ 23 का शेष ...)

का कथन है। अर्थात् यह अकेले द्रव्य (ध्रुव) की बात नहीं है, अपितु भाई ! द्रव्य-गुण-पर्याय तीनों की बात है, इसलिये कहा है कि ह्न गुण-पर्याय वर्तने का कथन है और स्निग्ध-रूक्षत्व के कारण बंध होने से अनेक परमाणुओं की एकत्वपरिणतिरूप स्कन्ध के भीतर रहा हो; तथापि स्वभाव को न छोड़ता हुआ, संख्या को प्राप्त होने से अर्थात् परिपूर्ण एक की भाँति पृथक् गिनती में आने से अकेला ही द्रव्य है।

और मार्गप्रकाश में श्लोक द्वारा कहा है कि ह्न

परमाणु को आठ प्रकार के स्पर्शों से अन्तिम चार स्पर्शों में से दो स्पर्श, एक वर्ण, एक गंध तथा एक रस समझना,अन्य नहीं।

अहाहा... ! परमाणु अर्थात् एक रजकण-प्वाइन्ट... और वह भी एक स्वतंत्र वस्तु है। देखो ! परमाणु का स्वरूप स्वतंत्र है, इसलिये उसका जो कोई परिणमन होता है, भाषा होती है, वाणी होती है, हिलना होता है ह्न इत्यादि सब स्वतंत्रपने जड़ से होता है; परन्तु वह आत्मा से बिल्कुल नहीं होता ह्न ऐसा यहाँ सिद्ध करना है। यह वस्तुस्थिति होने पर भी अज्ञानी जीव इस बोलने-चलने की क्रिया को जीव की क्रिया मानता है ह्न इसकारण ही वह मूढ़-मिथ्यादृष्टि है।

प्रश्न : व्यवहार से तो वह क्रिया जीव की है न ?

उत्तर : बिल्कुल नहीं; व्यवहार से भी वह क्रिया किंचित्मात्र भी जीव की नहीं है। व्यवहार माने निमित्त का कथन है। साथ में कौन उपस्थित था ह्न इतना बतलाने के लिये व्यवहार से कहा जाता है; परन्तु इतने मात्र से कहीं वह कार्य निमित्त से नहीं हुआ है।

भाई ! यह भाषा परमाणुओं से बनी हुई है, यह शरीर परमाणुओं से बना हुआ है और जो यह शरीर चलता है, वह भी परमाणुओं से चलता है; आत्मा के कारण नहीं चलता। ऐसा होने पर भी, यह जड़ मुझसे चलता है ह्न ऐसी जो मान्यता है, वही मिथ्यात्व है, महापाप है। भाई ! यह पाखण्ड ही मिथ्यात्व का महापाप है। **(क्रमशः)**

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 26 299 अंक : 11

परनति सब जीवन की...

परनति सब जीवन की, तीन भाँति वरनी।
एक पुण्य एक पाप, एक राग-हरनी ।। टेक ।।
तामे शुभ-अशुभ अंध, दोय करैं कर्मबंध।
वीतराग परनति ही, भव-समुद्र तरनी ।।1।।
जावत शुद्धोपयोग, पावत नाहीं मनोग।
तावत ही करन जोग, कही पुण्य करनी।।2।।
त्याग शुभ क्रियाकलाप, करो मत कदाच पाप।
शुभ में न मगन होय, शुद्धता विसरनी।।3।।
ऊँच-ऊँच दशा धारि, चित्त प्रमाद को विडारि।
ऊँचली दशातैं मति, गिरो अधो धरनी।।4।।
भागचंद या प्रकार, जीव लहै सुख अपार।
याके निरधार स्यादवाद की उचरनी।।5।।

ह्न पण्डित भागचंदजी

पराश्रय से संसार, स्वाश्रय से मुक्ति

पूज्यपाद आचार्य श्री देवनन्दिस्वामी के प्रसिद्ध ग्रन्थ इष्टोपदेश के 47 वें श्लोक पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

मूल श्लोक इसप्रकार है ह्न

आत्मानुष्ठाननिष्ठस्य व्यवहार बहि:स्थिते:।
जायते परमानन्द: कश्चिद्योगेन योगिन:।।47।।

आत्मस्वरूप में स्थित हुये तथा व्यवहार से दूर रहे योगी को योग से कोई अनिर्वचनीय परम आनन्द उत्पन्न होता है।

(गतांक से आगे...)

निवृत्ति और प्रवृत्ति दोनों ही व्यवहार का लक्षण है। निवृत्ति निश्चय का और प्रवृत्ति व्यवहार का लक्षण हो ह्न ऐसा नहीं है। परपदार्थ मेरे नहीं हैं, दया-दानादि भाव शुभविकल्प हैं; अत: ये सब व्यवहार हैं। व्यवहार करते-करते निश्चय हो जायेगा ह्न ऐसा मानना भ्रम है। हे भाई ! देहादि परपदार्थ और तत्संबंधी समस्त विकल्पों से दूर होकर जो आत्मा के समीप रहता है, अन्तर्मुखी दृष्टि करके आत्मा में लीन होता है, वह ध्यानी योगी है। ऐसे योगी को वचनअगोचर आनन्द अवश्य प्राप्त होता है।

अनादिकाल से अज्ञानी जीव रागादि भावों में ही एकत्व करता आया है। राग का एकत्व भी एकप्रकार का ध्यान है; किन्तु यह आर्तध्यान है, दु:खरूप है; अत: रागादि को दु:खरूप जानकर उससे दूर होकर जो निज चैतन्य की उपयोगरूप भूमि अर्थात् ज्ञायक आत्मा में एकत्व करता है, वह आत्मध्यान पाता है। आत्मध्यान करनेवाला आठ वर्ष का बालक हो अथवा वृद्ध हो; किन्तु उसे आत्मा के आनन्द का अनुभव होता ही है।

आत्मानन्द का स्वाद वचन-अगोचर परमानन्दरूप है। अरे ! संसार में प्राप्त साधारण वस्तुओं (लड्डू, चीनी, मिठाई) में जो स्वाद आता है, वह वाणी के द्वारा

नहीं कहा जा सकता। जिसका स्वाद ख्याल में आया, उसका भी कथन जब वाणी के द्वारा नहीं किया जा सकता तो फिर आत्मा के अतीन्द्रिय आनन्द का स्वाद कैसे वर्णन किया जा सकता है ? आत्मा का स्वाद कोई अचिन्त्य ही है, जिसका कथन वाणी में नहीं किया जा सकता, अत: आत्मा का आनन्द वचन-अगोचर है।

प्रथम वस्तु का स्वरूप जाने, पश्चात् उसका अनुभव होता है; अत: प्रथमत: आत्मा का स्वरूप कैसा है ? यह निश्चित करके पश्चात् उसमें एकाग्र हो तो यथार्थ अनुभव होता है। चाहे बालक हो, स्त्री हो अथवा तिर्यंच हो; आत्मा में एकाग्र होनेपर वचन-अगोचर अतीन्द्रिय आनन्द की प्राप्ति होती ही है।

शरीर-पुत्र-मकानादि, बहिरंग-अन्तरंग विकल्प और एक समयवर्ती पर्याय का भी लक्ष छोड़कर जो जीव अखण्डानन्द अभेद निज आत्मा का लक्ष करते हैं, उन्हें ही अन्तर एकाग्रतापूर्वक वचन-अगोचर परमानन्द दशा प्राप्त होती है।

भगवान आत्मा अनन्तगुणों की गठरी है, परमात्मा है, उसमें गुण भिन्न-भिन्न नहीं रहते। आत्मप्रदेश अनन्तगुणों से रहित खाली नहीं है। गुण तो आत्मप्रदेश में ठसाठस भरे हुये हैं।

ऐसे एक निज शुद्ध आत्मा में जो लीन होता है; उसे वचन-अगोचर, अन्य से अननुभूतह्न ऐसा परमानन्द प्राप्त होता है तथा जो आत्मा में लीन नहीं होता उसे कोई आनन्द प्राप्त नहीं होता।

अपने भगवान आत्मा को छोड़कर विभावभावों को अपनाने से चार गतिरूप परिभ्रमण छूटता नहीं है; अत: विभावभाव की समीपता छोड़कर स्वभाव की समीपता करे तो उसे वचनातीत परमानन्ददशा प्राप्त होती है।

अन्यमत में शंकराचार्य नामक बड़े महान पुरुष हुये हैं। उससमय पेशवा नामक बड़ा राजा उनके पैर दूध से धोता था। राजा सोचता था कि मेरे जैसा बड़ा राजा शंकराचार्य के पैर धोता है तो इससे शंकराचार्य को कितना आनन्द होता होगा ? इस बात की खबर शंकराचार्य को हुई तो उन्होंने कहा कि हे राजा ! तू हमारे चरणों को धोता है, इसलिये हमें आनन्द नहीं होता; अपितु तू हमारे बताये हुये शास्त्रों को

यथावत् समझता है, हमारी कही हुई बात सुनता है, इसलिये हमें आनन्द होता है; किन्तु भाई ! शास्त्र को समझने के विकल्परूप आनन्द भी दु:खरूप है; अत: उसे छोड़कर स्वभाव की समीपतापूर्वक उसमें लीनता करने से जो आनन्द प्रगट होता है, वही यथार्थ आनन्द है। इसके समान कोई आनन्द जगत में नहीं है।

आत्मानन्द को प्राप्त ज्ञानी को जगत के समस्त वैभव तुच्छ लगते हैं। निज आत्मानन्द-अमृत के समक्ष उसे इन्द्रपद का भोग भी जहर के समान लगता है।

निज परमस्वभाव की दृष्टि और आनन्द के अनुभव बिना कोई बाहर से त्यागी हो जावे उससे क्या ? अन्तर आनन्द की रुचि हुये बिना बाह्य के आनन्द से कोई लेना-देना नहीं है। कोई त्यागी-मुनि कहे कि हमें बाह्य की लगन छूट गई है तो यह बात झूठी है; क्योंकि अन्तर की सच्ची लगन बिना बाहर की समस्त क्रियायें झूठी ही है।

मैं दया पालता हूँ, पाप नहीं करता हूँ, उपदेश दे सकता हूँ आदि समस्त शुभविकल्पों का ग्रहण और अशुभविकल्पों का त्याग ह्न इन दोनों से रहित होकर अर्थात् निवृत्ति और प्रवृत्ति का विकल्प छोडकर निज आत्मा में लवलीन त्यागी को आत्मएकाग्रता, आत्मध्यान से परमानन्द प्राप्त होता है ह्न ऐसा आनंद अनन्तकाल में कभी प्राप्त नहीं हुआ। यही जन्म-मरण के नाश का एकमात्र उपाय है।

इसप्रकार 47 वीं गाथा में ग्रहण-त्याग से शून्य आत्मतत्त्व में लवलीन योगी को विशिष्ट प्रकार का परमानन्द प्राप्त होता है ह्न ऐसा कहा है। **(क्रमश:)**

दसलक्षण महापर्व के सन्दर्भ में !

दसलक्षण महापर्व के अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक की ओर से प्रवचनार्थ जानेवाले विद्वानों और आमंत्रण देनेवाले जिनमंदिरों, मण्डलों और युवा फैडरेशन की शाखाओं को हमने एक पत्र भेजा है। यदि वह आपको किसी कारणवश नहीं मिल पाया हो, तब भी हमारा आपसे निवेदन है कि आप अपना आमंत्रण-पत्र शीघ्र भेज दें, जिससे आपके यहाँ विद्वान भेजने की व्यवस्था की जा सके।

विद्वानों से निवेदन है कि वे इस वर्ष प्रवचनार्थ जाने की स्वीकृति का पत्र जितना जल्दी भेजेंगे, उन्हें उपयुक्त स्थान पर भेजने में हमें उतनी ही अधिक सुविधा रहेगी।

पुद्गल का विशेष स्वरूप

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की 27 वीं गाथा पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है ह्न

एयरसरूवगंधं दोफासं तं हवे सहावगुणं।
विहावगुणमिदि भणिदं जिणसमये सव्वपयडत्तं ।।27।।

जो एक रसवाला, एक वर्णवाला, एक गंधवाला और दो स्पर्शवाला हो, वह स्वभावगुणवाला है; विभावगुणवाले को जिनसमय में सर्व प्रगट (सर्व इन्द्रियों से ग्राह्य) कहा है।

(गतांक से आगे...)

भाई ! शब्द का कारण परमाणु है, आत्मा नहीं। ये जो आवाज उत्पन्न होती है, वो आत्मा से नहीं होती। वह तो जड़ की दशा है, जो परमाणुओं से उत्पन्न होती है। यहाँ कहते हैं कि वे जड़ परमाणु स्कन्ध के अंदर हों तो भी सदा सबसे भिन्न, शुद्ध एकद्रव्य हैं। ह्न यह जो यहाँ शुद्ध शब्द आया है न, इसे जरा अधिक स्पष्ट करना है। अहा ! यह रजकण स्कन्ध के अन्दर होने पर भी अकेला और स्वतंत्र है ह्न इसकारण उसको शुद्ध कहते हैं। यद्यपि उसकी पर्याय वैभाविक है, तथापि वह अन्य से पृथक् है; इस अपेक्षा से उसको शुद्ध कहते हैं।

अहा ! यह स्कन्ध तो बहुत परमाणुओं का पिण्ड है; परन्तु उसके खण्ड करते-करते जो अन्तिम प्वाइन्ट रहे, वह स्कन्ध में रहता हुआ भी शुद्ध है।

जो परमाणु स्कन्ध में रहा हुआ है, वह वैभाविक अवस्थावाला होने पर भी उसको शुद्ध कहा है; क्योंकि वह परके संबंध से रहित है। अज्ञानी को ऐसी वस्तुस्थिति का ज्ञान नहीं होने से समझ नहीं होती, वह इस वस्तुस्थिति को समझे बिना ही धर्म मानता है, परन्तु भाई ! वह तो अनन्तकाल से चला आ रहा वही का वही चौरासी के परिभ्रमण का मार्ग है।

प्रश्न : स्कन्ध में रहा होने पर भी परमाणु को शुद्ध कैसे कहा ?

उत्तर : भाई ! यह तो कहा है न कि पर के संबंध रहित वह परमाणु अपने चतुष्टय में रहा है, इसलिये इस अपेक्षा से उसको शुद्ध कहा है।

प्रश्न : अच्छे-बुरे जो शब्द होते हैं, वे तो हमसे होते हैं न ?

उत्तर : शब्द जड़ से होते हैं, इसलिये शब्द में अच्छा या बुरा है ही नहीं। भाई ! यह वाणी तो जड़-धूल है।

प्रश्न : तो फिर यह शास्त्र सुनो और दूसरा मत सुनो, कुशास्त्र नहीं सुनना चाहिए और सुशास्त्र सुनना चाहिए ह्न ऐसा जो आता है, उसका क्या अर्थ है ?

उत्तर : यह बात व्यवहार से है। सुशास्त्र सुनने में शुभराग होता है ह्न इस अपेक्षा यह बात है, यों तो सुशास्त्र सुनना भी शुभराग है, पुण्यभाव है; धर्म नहीं। उसका अर्थ यह है कि जो शुभराग-सुनने का विकल्प आता है, वह प्रशस्त राग है; परन्तु वह धर्म नहीं है।

प्रश्न : सुशास्त्र अपने-आप थोड़े ही बने हैं ?

उत्तर : भाई ! शास्त्र तो जड़ हैं, इसलिये जड़ से स्वयं ही हुए हैं। शास्त्र, शास्त्र से-जड़ से हुए हैं, आत्मा से नहीं।

अहा ! भगवान वस्तु की यथार्थ स्थिति बताते हैं; पर अज्ञानी मानता है कि अपने को तो भक्ति करना और दान देना, जिससे भगवान और गुरु कुछ दे देंगे और अपना कल्याण हो जायेगा, परन्तु भाई ! इसमें रंचमात्र भी कल्याण नहीं होगा, तेरा एक भी भव कम नहीं होगा। लाखों करोड़ों रुपये दान में दे और सैकड़ों वर्षों तक भक्ति करके मर जाये तो भी एक भी भव नहीं घटेगा, अपितु अनेक भव खड़े रहेंगे।पर की भक्ति से और पर से मुझे लाभ होता है ह्न यह मान्यता ही मिथ्याभाव है।

यहाँ परमाणु को **शुद्ध** अकेला **द्रव्य** होने से कहा है न ?

भाई ! यहाँ तो मूल-गुणपर्यायवाला परमाणु द्रव्य लिया है और उसको शुद्ध परमाणु कहा है। कारण कि परमाणु को स्वतंत्र द्रव्य सिद्ध करना है न ? पंचास्तिकाय में भी कहा है कि ह्न यह परमाणु द्रव्य में गुण-पर्याय वर्तने **(शेष पृष्ठ 4 पर ...)**

छहढाला प्रवचन

देवगति के दुःखों का वर्णन

कभी अकाम निर्जरा करे, भवनत्रिक में सुर-तन धरे।
विषयचाह-दावानल दह्यो, मरत विलाप करत दुःख सह्यो ॥१५॥

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

लोगों को देवगति का नाम सुनते ही, मानो उसमें सुख होगा ह्न ऐसा भास होता है; परन्तु सुख तो आत्मा में है और कहीं नहीं। चारों ही गति कर्म का फल है, उनमें कहीं सुख नहीं है। तिर्यंच, नरक व मनुष्य इन तीनों गतियों में दुःख होने की बात तो जीवों को जल्दी समझ में आती है; परन्तु देवगति में ह्न स्वर्ग में भी दुःख है ह्न यह बात यहाँ समझाते हैं।

देवों के चार प्रकार हैं। उनमें से भवनवासी, व्यन्तर व ज्योतिषी ह्न इन तीन प्रकार के देवों में मिथ्यादृष्टि जीव ही उत्पन्न होते हैं, सम्यग्दृष्टि जीव उनमें उत्पन्न नहीं होते। यद्यपि वहाँ उत्पन्न होने के बाद कोई-कोई जीव सम्यग्दर्शन प्रगट कर लेते हैं; परन्तु उत्पन्न होने के समय में तो मिथ्यादृष्टि ही होते हैं। चौथा प्रकार वैमानिकदेवों का है; उसमें नवमें ग्रैवेयक तक तो मिथ्यादृष्टि या सम्यग्दृष्टि दोनों जाते हैं; फिर उससे आगे के विमानों में सम्यग्दृष्टि ही जाते हैं, मिथ्यादृष्टि जीव वहाँ नहीं जाते।

यहाँ पर यह कहना है कि अज्ञानी कदाचित् अकाम-निर्जरा करके हलकी देवपर्याय में उपजे तो वहाँ भी अज्ञानवश विषयों की चाहरूप दावानल से जलता रहा है, अतएव दुःखी ही है और देव आयु पूरी होने पर मृत्यु के समय विलख-विलख कर आर्त्तध्यान करता है।

इसप्रकार देवलोक में भी अज्ञानी दुःखी ही रहता है। भूख-प्यास आदि को समतापूर्वक सहन करके शुभभाव रखने से कुछ अकामनिर्जरा होती है और पुण्य का बन्ध होता है, उससे जीव स्वर्ग में जाते हैं। अज्ञानी के शुभभाव से होनेवाली

यह निर्जरा मोक्ष का कारण नहीं बनती; सम्यग्दर्शनपूर्वक शुद्धभाव से होनेवाली निर्जरा ही मोक्ष का कारण बनती है।

अज्ञानदशा में शुभपरिणाम से अकामनिर्जरा करके स्वर्ग का देव तो जीव अनन्तबार हो चुका; परन्तु उससे उसका संसार-भ्रमण न मिटा। अज्ञानी ने कभी चैतन्यसुख को तो देखा नहीं, अतः हलकी जाति का देव हो तो भी वहाँ के देवलोक के वैभव से मोहित होकर उसी में मूर्छित हो जाता है और पाँच इन्द्रियों के विषयों की अभिलाषा से दुःखी ही रहता है।

तीन प्रकार के उन देवों की आयु-स्थिति कम से कम दस हजार वर्ष से लेकर एक सागरोपम तक की है। उन दोनों के बीच में एक-एक समय की अधिकता करके असंख्य प्रकार के आयु के भेद होते हैं, उनमें से प्रत्येक में अनंतबार जीव उपजा और मरा; परन्तु उसमें कहीं उसको सुख न मिला। कहाँ से मिले? चारों गतियाँ संसार है; जो संसार है, सो परभाव है और परभाव है, सो दुःख है। जितनी स्वभावदशा प्रगटे, उतना परभाव मिटे और उतना सुख हो।

समयसार की पहली गाथा में मोक्षगति को स्वभावभावभूत कहा है; इसके अतिरिक्त संसार की चारों गतियाँ विभावरूप हैं और विभाव का फल तो दुःख ही होता है। अतः योगसार में कहा है कि हे जीव! यदि चार गति के दुःख से तुम डरते हो, उस दुःख से छूटना चाहते हो तो उसके कारणरूप सभी परभावों को छोड़ो और शुद्धात्मा का चिन्तन करके शिवसुख की प्राप्ति करो। सर्वज्ञकथित आत्मस्वभाव कैसा है ? उसको जानने की परवाह जो नहीं करते, वे अज्ञानभाव के सेवन से चार गति में दुःखी होते हैं; स्वर्ग का देव हो तो भी वह दुःखी है। सुखी तो सम्यग्दृष्टि-निर्मोही-सन्त हैं। सम्यग्दर्शन के बिना किसी को सुख नहीं हो सकता।

भवनवासी देवों के दस प्रकार हैं। व्यन्तर देवों के आठ प्रकार हैं। जिसको भूत-पिशाच-राक्षस कहा जाता है, वह व्यन्तर देवों की जाति है। ज्योतिषी देवों के सूर्य-चन्द्र आदि पाँच प्रकार हैं। जिस मिथ्यादृष्टि जीव ने किसी शुभभाव से अकामनिर्जरा की हो, वही इन तीन प्रकार के देवों में उत्पन्न होता है। अनेक जीव वहाँ देव होने

के बाद भगवान के समवशरण में जाकर धर्मश्रवण करते हैं और सम्यग्दर्शन भी पा लेते हैं; शेष बहुभाग के देव तो विषयों की चाहना से दुःखी ही रहते हैं।

देवों को बाहर में भूख-प्यास-रोगादि का कोई दुःख नहीं होता; बाहर में तो उन्हें बड़े-बड़े राजाओं से भी अधिक वैभव होता है, परन्तु अन्तर में वे विषयों की चाह से व हास्य-कौतुहल से आकुल व्याकुल होते हुए दुःखी हो रहे हैं और जब मृत्यु का समय नजदीक आता है, तब चिरपरिचित भोगसामग्री का वियोग होता देखकर आर्त्तध्यान से पीड़ित होते हुये बहुत दुःख से मरकर दुर्गति में चले जाते हैं।

देवों के कंठ में मंदारमाला होती है, जो कभी मुरझाती नहीं; किन्तु देवलोक की आयु में से जब अन्तिम छह मास बाकी रहते हैं, तब मिथ्यादृष्टि देवों की वह मन्दारमाला मुरझाने लगती है, उनके आभूषणों का प्रकाश मन्द होने लगता है ह्न ऐसे चिह्नों को देखकर, विभंगज्ञान से वे जान लेते हैं कि अब मृत्यु का काल निकट आया है। अरे! अब इस देवलोक के उत्तम भोग मुझे कहीं भी नहीं मिलेंगे; इन देवियों का वियोग हो जायेगा। न जाने अब मैं कहाँ जाऊँगा? अब क्या करूँ? ऐसे विषयों की तीव्र इच्छा से महादुःखी होते हुए वे मरते हैं और मरकर आर्त्तध्यान के कारण से कुत्ते-गधे आदि किसी तिर्यंच में अथवा तो एकेन्द्रिय में अवतार लेते हैं, कोई मनुष्य में भी अवतरते हैं। कोई भी देव मरके सीधे नरक में नहीं जाते।

जो देव सम्यग्दृष्टि हैं, वे तो उत्तम मनुष्य में ही अवतार लेते हैं; आयु पूरा होने के समय वे अपना चित्त जिनदेव की पूजनादि में लगाते हैं, उन्हें स्वर्ग के किसी वैभव की अभिलाषा नहीं है, अतः वे मिथ्यादृष्टि देवों की तरह दुःखी नहीं होते।

कर्म का जितना उदय हो, उतने ही प्रमाण में जीव को विकार हो ह्न ऐसा कोई नियम नहीं है, हीनाधिकता होती है। अशुभकर्म का उदय होते हुए भी यदि समतापूर्वक शुभभाव से जीव सहन करे तो अशुभकर्म की अकामनिर्जरा होकर वह देव होता है; परन्तु देव होकर भी अज्ञानी जीव राग में लीनता से दुःखी ही रहता है। जीव जबतक सम्यग्दर्शन प्रगट न करे, तबतक उसका दुःख मिटता नहीं और सुख होता नहीं।

सम्यग्दर्शन के बिना वैमानिकदेव भी दुःखी होता है ह्न यह बात आगे की गाथा में कहेंगे। •

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : न्याय और तर्क से तो ये बातें जमती है, किन्तु अन्दर जाने का साहस क्यों नहीं हो पाता ?

उत्तर : अन्दर में पहुँचने का जितना पुरुषार्थ होना चाहिए, उतना नहीं बन पाता, इसीलिए बाहर भटकता रहता है। अन्दर जाने की रुचि नहीं हैं; इसीलिए उपयोग अन्दर नहीं जाता।

प्रश्न : ज्ञान का स्वभाव जानने का ही है, तो स्वयं अपने को क्यों नहीं जानता ?

उत्तर : ज्ञान स्वयं को जानता है; उसका स्वभाव स्वयं को जानने का है; परन्तु अज्ञानी की दृष्टि तो पर के ऊपर है, अत: स्वयं को नहीं जानता, उसे पर में अधिकता (महिमा) पड़ी है अर्थात् पर को अधिक मानने के कारण स्वयं अपने को नहीं जानता। अधिकपने इसका बल पर में जाता है; अत: अपने को नहीं जान पाता।

प्रश्न : भगवान आत्मा को ज्ञानमात्र क्यों कहा जाता है ? आप बारम्बार 'भगवान आत्मा...भगवान आत्मा' कहते हैं ? कृपया उसका स्वरूप बताइये ?

उत्तर : भाई ! भगवान आत्मा अनन्त शक्तियों का संग्रहालय, अनन्त गुणों का गोदाम, अनन्त आनन्द का कन्द, अनन्त महिमावंत, अतीन्द्रिय महापदार्थ है; उसे ज्ञानमात्र भी कहा जाता है। आत्मा ज्ञानमात्र है अर्थात् वह शरीर, मन, वाणी और पुण्य-पापरूप नहीं है, एकसमय की पर्यायमात्र भी नहीं है। वह ज्ञान, दर्शन, अकार्यकारण, भाव, अभाव आदि अनन्त शक्तिमय है।

प्रभु ! तेरे घर की क्या बात कहें ? तुझमें अनन्त शक्तियाँ भरी पड़ी हैं और एक-एक शक्ति अनन्त सामर्थ्यवान है, एक-एक शक्ति अनन्त गुणों में व्यापक है, एक-एक शक्ति में दूसरी अनन्त शक्तियों का रूप है, एक-एक शक्ति दूसरी अनन्त शक्तियों में निमित्त है। एक-एक शक्तियों की अनन्त पर्यायें हैं, वे पर्यायें क्रम-क्रम

से होती हैं, इसलिये क्रमवर्ती हैं। अनन्त शक्तियाँ एकसाथ रहती हैं, इसलिये वे अक्रमवर्ती हैं।

इसप्रकार आत्मद्रव्य अक्रमवर्ती और क्रमवर्ती गुण-पर्यायों का पिण्ड है। द्रव्य शुद्ध है, गुण भी शुद्ध है; इसलिये उसकी दृष्टि करने पर परिणमन भी शुद्ध ही होता है। मैं ज्ञानमात्र वस्तु हूँ ह्न ऐसी दृष्टि होने पर पर्याय में जीवत्व शक्ति का परिणमन हुआ; उसके साथ ज्ञान, दर्शन, आनन्द, अकार्यकारणत्व आदि अनन्त शक्तियों की पर्यायें उछलती हैं ह्न प्रगट होती हैं।

प्रश्न : उछलती हैं अर्थात् क्या ?

उत्तर : द्रव्य वस्तु है, उसमें अनन्त शक्तियाँ है। जब एक शक्ति का परिणमन होता है, तब अनन्त शक्तियों की परिणति एकसाथ उत्पन्न होती है ह्न इसी को उछलना कहा जाता है।

प्रश्न : क्या अज्ञानी को प्रथम से ही आत्मा की बात कहनी चाहिये ?

उत्तर : समयसार की गाथा-8 में आचार्यदेव ने आत्मा आनन्दस्वरूप है उसको पहचानने के लिये समझाया है। प्रथम ही द्वीप, समुद्र, लोक की रचना आदि की जानकारी अथवा व्रतादि करने के लिये नहीं कहा; अपितु शुद्धात्मा को पहचानने के लिये कहा है। समझने के लिये आनेवाला भी अभी आत्मा को समझा नहीं है, फिर भी जिज्ञासा से टकटकी लगाकर देख रहा है; उससे कहते हैं कि जो दर्शन-ज्ञान-चारित्र को सदैव प्राप्त हो, उसे आत्मा कहते हैं। इसप्रकार व्यवहारी जीवों को भी प्रथम शुद्धात्मा ही समझाया है। अनादिकालीन बंधन से छूटकर मुक्ति कैसे प्राप्त हो ? ह्न यही आचार्यदेव अज्ञानी जीव को समझाते हैं।

हार्दिक बधाई !

श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय के अधीक्षक पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री, जयपुर का लैक्चररशिप के लिये राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट) में चयन हो गया है। आपने यह परीक्षा जैनदर्शन से उत्तीर्ण की है। आपको महाविद्यालय एवं वीतराग-विज्ञान परिवार की ओर से हार्दिक बधाई ! **ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

समाचार दर्शन ह्न

महावीर जयन्ती एवं उपकार दिवस धूम-धाम से मनाया

1. **नई दिल्ली :** देश की राजधानी दिल्ली महानगर में 'अध्यात्मतीर्थ' आत्म साधना केन्द्र पर भगवान महावीर स्वामी के 2607 वें जन्मकल्याणक महामहोत्सव एवं आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी की 119 वीं जन्मजयन्ती 'उपकार दिवस' के अन्तर्गत आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर एवं श्री रत्नत्रय महामण्डल विधान का आयोजन दिनांक13 से 20 अप्रैल, 08 तक अपूर्व धर्म प्रभावना के साथ सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, जयपुर के अध्यात्मरस से ओतप्रोत मार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा क्रमबद्धपर्याय, बाल ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री द्वारा छहढाला, पण्डित सुनीलजी राजकोट द्वारा द्रव्य-गुण.पर्याय एवं विदुषी राजकुमारीजी इन्दौर द्वारा जैसी करनी वैसी भरनी विषय पर ली गई विशेष कक्षाओं का समाज ने लाभ लिया।

इस अवसर पर दोपहर में व्याख्यानमाला एवं गुरुदेवश्री के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व विषय पर आयोजित गोष्ठी में डॉ. सुदीपजी जैन, डॉ. वीरसागरजी जैन, डॉ. अनेकान्तजी जैन, पण्डित राकेशजी शास्त्री, पण्डित ऋषभजी शास्त्री, पण्डित संदीपजी शास्त्री, पण्डित मनोजजी, पण्डित राजकिशोरजी आदि विद्वानों का लाभ मिला साथ ही श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के विद्यार्थियों द्वारा सांयकालीन बालकक्षाओं का संचालन किया गया।

महोत्सव के दौरान शुक्रवार, दिनांक 18 अप्रैल को भगवान महावीरस्वामी की जन्मजयन्ती पर भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया व भगवान आदिनाथ व भगवान चंद्रप्रभ के मंदिर में 119 चंवर स्थापित किये गये साथ ही अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन खेकड़ा के बच्चों ने 'मनुष्यभव की उत्कृष्टता' नाटिका का मंचन किया । वीतराग-विज्ञान पाठशाला शंकरनगर, कैलाशनगर, नांगलोई तथा रोहिणी नगर के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

रविवार, दिनांक 20 अप्रैल को गुरुदेवश्री के 119 भव्य चित्रों को लेकर विशाल शोभायात्रा निकाली गई एवं स्वर्णपुरी सोनगढ़ में गुरुदेवश्री द्वारा 33 शास्त्रों पर हुए प्रवचन ग्रंथों को भगवान महावीर मंदिर में जिनवाणी वेदी पर स्थापित किया गया। विधि-विधान के समस्त कार्यक्रम बाल ब्र. पण्डित जतीशचंदजी शास्त्री के कुशल निर्देशन में सम्पन्न हुये।

सम्पूर्ण दिल्ली एवं बाहर से पधारे हुए लगभग 400 शिविरार्थियों ने कार्यक्रम का लाभ लिया व हजारों रूपयों के सतसाहित्य व सी.डी. का विक्रय हुआ। देश के प्रमुख मुमुक्षु अतिथियों की उपस्थिति में सम्पूर्ण कार्यक्रम अभूतपूर्व धर्मप्रभावना के साथ सम्पन्न हुआ।

इसी श्रृंखला में **विश्वासनगर** में कुन्दकुन्द कहान दि. जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 21 अप्रैल को डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के समयसार का सार एवं 22 अप्रैल को पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के समयसार के 42 वें कलश पर हुए मार्मिक प्रवचन का लाभ भी समाज को प्राप्त हुआ।

2. रतलाम (म. प्र.) : यहाँ भगवान महावीरस्वामी की जन्मजयन्ती के अवसर पर राममोहल्ला स्थित दि. जैन आदिनाथ चैत्यालय से तोपखाना स्थित दिगम्बर जैन मंदिर तक शोभायात्रा का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर तत्त्वलहर महिला मण्डल द्वारा छहढाला पर आधारित अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। साथ ही 'पंच परमेष्ठी का स्वरूप व उसे जानने से लाभ' विषय पर निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई। रात्रि में पारितोषिक वितरण का कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम का संचालन महिला मण्डल की अध्यक्षा श्रीमती अंजनाजी अजमेरा ने कियाा। सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित पद्मकुमारजी अजमेरा के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

3. जयपुर (राज.) : यहाँ राजस्थान जैन सभा के तत्त्वावधान में महावीर जयन्ती के प्रसंग पर पंच दिवसीय कार्यक्रमों के अन्तर्गत राष्ट्रीय कवि सम्मेलन, प्रभात फेरी, विद्वत् विचार-गोष्ठी आदि अनेक कार्यक्रम आयोजित किये गये। 18 अप्रैल को महावीर जयन्ती के दिन श्री योगेशजी टोडरका के संयोजकत्व में महावीर पार्क से विशाल जुलूस का शुभारम्भ हुआ जो नगर के विविध मार्गों से होता हुआ रामलीला मैदान पहुँचकर धर्मसभा में परिवर्तित हुआ।

श्री टोडरमल स्मारक भवन में भी प्रात: पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल एवं श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी के करकमलों से झण्डारोहण हुआ। तदुपरान्त बापूनगर जैन समाज के सभी लोगों के साथ श्री टोडरमल स्मारक भवन से जुलूस रवाना हुआ, जो लाल कोठी जैन मंदिर होते हुये पार्श्वनाथ चैत्यालय बापूनगर पहुँचा, जहाँ पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा के उद्‌बोधन का लाभ मिला। बाद में यह जुलूस जयपुर के मुख्य जुलूस में शामिल हुआ।

आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन का शुभारम्भ

नई दिल्ली : यहाँ आत्मसाधना केन्द्र पर भगवान महावीरस्वामी जन्मजयन्ती एवं उपकार दिवस पर 20 अप्रैल, 08 को **आत्मार्थी विद्या निकेतन** का शुभारम्भ इसी वर्ष जुलाई से करने का संकल्प किया गया।

इस विद्या निकेतन में 8 वीं कक्षा पास 15 बालिकाओं को प्रवेश देकर उन्हें दिल्ली के प्रतिष्ठित सी.बी.एस.ई. बोर्ड के शिक्षण संस्थान में 9 वीं से 12 वीं कक्षा तक अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम में प्रवेश दिलाया जायेगा।

बालिकाओं के सुनहरे भविष्य के लिये मुमुक्षु समाज का देश में प्रथम विद्यालय **आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन** आवेदन-पत्र आमंत्रित करता है। आवेदन पत्र विदुषी राजकुमारी जैन (मो.09414753414), निदेशक-आत्मार्थी विद्या निकेतन, आत्म साधना केन्द्र, घेवरा मोड, रोहतक रोड, नई-दिल्ली के पते पर 20 मई, 08 तक एक फोटो व 8 वीं की मार्कशीट की फोटोकॉपी सहित भेजें। **ह्र सुमति सेठिया**

समयसार संगोष्ठी एवं पुरस्कार समर्पण समारोह सम्पन्न

नई दिल्ली : श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् के तत्त्वावधान में सिद्धान्त चक्रवर्ती आचार्य श्री विद्यानन्दजी मुनिराज के ससंघ सान्निध्य में 23 से 25 अप्रैल, 08 तक बाहुबली एन्कलेव नई दिल्ली में समयसार संगोष्ठी एवं पुरस्कार समर्पण समारोह सम्पन्न हुआ।

संगोष्ठी में समयसार की विभिन्न गाथाओं पर सारगर्भित व्याख्यान हुए। व्याख्यानकर्त्ताओं में एलाचार्य श्री श्रुतसागरजी एवं मुनि श्री विकर्षसागरजी के अतिरिक्त सर्वश्री डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल जयपुर, श्री नीरज जैन सतना, डॉ. सुदर्शनलाल जैन वाराणसी, पण्डित धन्यकुमार भौरे कारंजा, पण्डित रतनचन्द भारिल्ल जयपुर, ब्र. हेमचन्द 'हेम'भोपाल, डॉ. राजेन्द्र बंसल अमलाई, डॉ. राकेश शास्त्री अलीगढ़, डॉ. अशोक गोयल दिल्ली, डॉ. वीरसागर दिल्ली, पण्डित राकेश शास्त्री लोनी, पण्डित विराग शास्त्री जबलपुर तथा पण्डित अरुण मोदी सागर प्रमुख थे।

सभी वक्ताओं के व्याख्यानों के उपरान्त आचार्य श्री विद्यानन्दजी एवं डॉ. भारिल्ल ने अपनी सटीक टिप्पणी से विषय का प्रतिपादन किया, जिससे श्रोताओं को गम्भीर विषय समझने में आसानी रही।

दिनांक 25 अप्रेल को विद्वत्परिषद् द्वारा प्रवर्तित विभिन्न पुरस्कार प्रदान किये गये। पुरस्कार प्राप्तकर्त्ताओं में डॉ. श्रीरंजनसूरीदेव पटना, श्री राजमल जैन दिल्ली, पण्डित विराग शास्त्री जबलपुर, डॉ. राकेश शास्त्री अलीगढ़ तथा पण्डित मनोहर मारवड़कर नागपुर को विद्वतरत्न की उपाधि से विभूषित किया गया। पुरस्कार स्वरूप सभी को पाँच-पाँच हजार रुपये की नगद राशि, शॉल, श्रीफल, प्रशस्ति पत्र व वाग्देवी सरस्वती की प्रतिकृति सम्मान स्वरूप प्रदान की गई।

आजीवन श्रुत सेवा सम्मान योजना के अन्तर्गत 75 वर्ष से अधिक आयु के विद्वानों को इस अवसर पर सम्मानित करते हुये, उन्हें सारस्वत मनीषी के विरुद से विभूषित किया। समारोह में समागत विद्वत्परिषद् के अन्य सदस्यों में प्राचार्य कुन्दनलालजी दिल्ली, डॉ. जे.पी. जैन दिल्ली, पण्डित आलोक शास्त्री कारंजा तथा अखिल बंसल जयपुर आदि प्रमुख थे। कार्यक्रम का सफल संचालन विद्वत्परिषद् के महामंत्री डॉ. सत्यप्रकाश जैन ने किया। **ह्र अखिल बंसल,** प्रचार मंत्री

नन्दीश्वर विद्यापीठ का नवीन सत्र

खनियांधाना (शिवपुरी) : यहाँ श्री महावीर कुन्दकुन्द कहान नन्दीश्वर दिगम्बर जैन विद्यापीठ खनियांधाना में सत्र - 2008-09 हेतु प्रवेश प्रारंभ हो गया है, जिसमें कक्षा 6 से 9 तक के छात्रों को आवासीय छात्रों के रूप में प्रवेश दिया जाता है। इसका सत्र 15 जून 2008 से प्रारंभ हो रहा है। इच्छुक विद्यार्थी पालकों सहित दिनांक 15 से 19 जून 2008 तक आयोजित होनेवाले संस्कार शिक्षण-शिविर में अवश्य पधारें, जिसमें चयन एवं साक्षात्कार पद्दति से विद्यार्थियों को प्रवेश दिया जायेगा।

सम्पर्क – मनीष शास्त्री, चेतनबाग, खनियांधाना। 09424434234

शिविर सानन्द सम्पन्न

1. मुम्बई (मलाड-वेस्ट) : यहाँ एवरशाईन नगर में दिनांक 17 से 20 अप्रैल तक श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में चार दिवसीय शिविर का आयोजन बड़े हर्षोल्लास पूर्वक किया गया।

इस अवसर पर पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई के समयसार पर मार्मिक प्रवचन हुये तथा पण्डित विपिनजी शास्त्री श्योपुर, पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री, पण्डित सौरभजी शास्त्री, पण्डित राहुलजी, पण्डित अनेकांतजी भारिल्ल एवं कु. मुक्ति जैन द्वारा क्रमबद्धपर्याय, छहढाला, बालबोध पाठमाला आदि विषयों पर कक्षायें ली गई।

पूजन-विधानादि के कार्य पण्डित अभिनयजी शास्त्री कोलकाता ने सम्पन्न कराये।

2. जामनगर (गुज.) : अंतर्राष्ट्रीय दि. जैन मुमुक्षु महासंघ द्वारा दिनांक 25 से 30 अप्रैल 08 तक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: गुरुदेवश्री का टेप प्रवचन चलता था। इसके अतिरिक्त पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, पण्डित सुनीलजी शास्त्री राजकोट, पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित स्वतंत्रजी शास्त्री खरगापुर, पण्डित सचिन जैन भरड़ा, पण्डित सुधीर जैन अमरमऊ, पण्डित अनुराग जैन भगवाँ, पण्डित विशेष जैन बड़ामलहरा एवं पण्डित करण शाह द्वारा बालकों एवं प्रौढ़ों के लिये कक्षाओं का आयोजन हुआ। ध्यान रहे, अध्यापन कार्य करनेवाले सभी विद्वान टोडरमल महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक रहे हैं।

सायंकाल सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा धर्म प्रभावना हुई। शिविर का उद्घाटन श्री अनंतभाई सेठ मुम्बई एवं श्री बसन्तभाई दोशी मुम्बई द्वारा हुआ।

तमिलभाषा में अनुवाद होना चाहिये

समयसार की ज्ञायभाव प्रबोधिनी टीका को पढकर **पाण्डीचेरी से श्री चम्पालालजी जैन** लिखते हैं कि ह्न श्री हुकमचन्दजी भारिल्ल साहब ने समयसार पर बहुत ही सुन्दर टीका लिखी है। इसमें प्रत्येक व्यक्ति को सुगमता से ज्ञान प्राप्त हो इसकी भरसक कोशिश की है। पण्डितजी बधाई के पात्र हैं। उपरोक्त ग्रन्थ के प्रथम पेज पर यह देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि ऐसे महान ग्रंथ का गुजराती, मराठी और अंग्रेजी में अनुवाद होने जा रहा है। यह एक महान उपलब्धि है। मेरा आपसे सविनय निवेदन है कि अगर इस ग्रन्थ का तमिल में अनुवाद होकर प्रकाशित होवे तो बड़ा ही उपयुक्त होगा, क्योंकि तमिल भाषा में जैन साहित्य की बहुत कमी है। इसलिये ऐसे महान ग्रन्थ का अनुवाद तमिल में होना ही चाहिये, जिससे तमिल भाषियों को समयसार का ज्ञान प्राप्त हो ह्न यह एक महान कार्य है। इसे आपकी ही संस्था करा सकती है, क्योंकि आपके यहाँ प्रत्येक भाषा के अच्छे से अच्छे विद्वान मौजूद है, अत: आपसे निवेदन है कि इस महान यज्ञ को पूर्ण करने की कृपा कीजियेगा।

ऐसे पुनीत कार्य में मैं भी यथाशक्ति सहयोग करने की भावना रखता हूँ।

अ.भा. जैन पत्र सम्पादक संघ का अधिवेशन

नई दिल्ली : अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ का प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन आचार्यश्री विद्यानन्दजी मुनिराज के ससंघ सान्निध्य में 25 अप्रैल, 08 को बाहुबली एन्कलेव में पद्मश्री सरयू दफ्तरी मुम्बई की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। आपने अपने उद्बोधन में पत्रकारों को रिसर्च की आदत डालने का आह्वान करते हुए पठनीय सामग्री प्रकाशित करने का सुझाव दिया।

मुख्य अतिथि के रूप में पधारे वीतराग-विज्ञान के सम्पादक डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने कहा कि पत्रकारिता समाज का दर्पण ही नहीं अपितु उसे दीपक का कार्य भी करना चाहिए। पत्रकारिता बहुत बड़ी ताकत है, पत्रकारों को कठोर से कठोर बात अत्यन्त विनम्र भाषा में लिखना चाहिए तथा ऐसी सामग्री प्रकाशित करना चाहिए जिसे बार-बार पढ़ने की इच्छा हो।

समारोह के विशिष्ट अतिथि पंजाब केसरी के कार्यकारी अध्यक्ष स्वदेश भूषण जैन ने पत्रकारों को पीत पत्रकारिता से दूर रहकर पोजेटिव तथ्य समाज के समक्ष प्रस्तुत करने की बात कही। आपने कहा हमारा कार्य केंची के समान न होकर सुई धागे जैसा होना चाहिए। संघ के उपाध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र बंसल ने कहा कि पत्रकारिता महत्वपूर्ण स्तम्भ है, उसे आगम के मूल्यों की रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। सभा को संस्कार सागर के सम्पादक ब्र. जिनेश मलैया, स्वतंत्र जैन चिन्तन के सम्पादक श्री नरेन्द्र जैन तथा सुरेशचन्द बारोलिया ने भी सम्बोधित किया।

आचार्य श्री विद्यानन्दजी मुनिराज ने सभी पत्र सम्पादकों को अपना शुभाशीष प्रदान करते हुए समाज में कलह पैदा करने से बचने की प्रेरणा दी तथा संस्कार पैदा करने हेतु रुचिकर सामग्री प्रकाशित करने की सलाह दी। आपने अपना मूल मंत्र मत ठुकराओ, गले लगाओ, धर्म सिखाओ के सिद्धान्त पर चलने का आह्वान किया।

अधिवेशन के पूर्व कार्यकारिणी की मीटिंग संघ के कार्याध्यक्ष श्री नरेन्द्रकुमार जैन की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। संघ के महामंत्री अखिल बंसल ने संघ की आवश्यकता बताते हुए उसकी गतिविधियों की जानकारी दी तथा मंच संचालन किया। वीर के सम्पादक श्री रवीन्द्र मालव को सर्व सम्मति से संघ का नया अध्यक्ष चुना गया। ह्न **अखिल बंसल**

धर्म प्रभावना

जयपुर (राज.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा-अलवर के सदस्यों द्वारा पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री के निर्देशन में श्री संजीवकुमार महेन्द्रकुमारजी गोधा के बी-54, जनता कॉलोनी स्थित नूतन गृह प्रवेश के अवसर पर द्वि-दिवसीय प्रवचन-विधान का कार्यक्रम सम्पन्न कराया गया।

दिनांक 30 अप्रैल, 08 को सायंकाल सिद्धान्ताचार्य पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के मार्मिक प्रवचन एवं जिनेन्द्र भक्ति ने उपस्थित जन समुदाय का मन मोह लिया।

दिनांक 1 मई, 08 को प्रात: शान्ति विधान का सुन्दर आयोजन किया गया। इस प्रसंग पर पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री आदि की ससम्मान उपस्थिति रही।

इस अवसर पर संस्था को 2100/- रुपये की राशि प्रदान की गई।

भव्य वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव

कोटा (राज.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा कोटा के तत्त्वावधान में श्री दिगम्बर जैन पोरवाल मंदिर रामपुरा में दिनांक 23 से 25 अप्रैल, 2008 तक तीन दिवसीय वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव का भव्य आयोजन आदरणीय बाबू जुगलकिशोरजी युगल कोटा के मंगल सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

प्रतिष्ठा महोत्सव की सम्पूर्ण विधि पण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित धर्मचन्दजी जैन जैथल एवं सहयोगी पण्डित चेतनजी शास्त्री कोटा, पण्डित प्रयंकजी शास्त्री रहली एवं पण्डित निकलंक शास्त्री कोटा द्वारा सम्पन्न हुई।

इस अवसर पर पण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री रहली के समयसार पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। कार्यक्रम में पण्डित विजय शास्त्री, पण्डित आशीष शास्त्री, पण्डित समीर जैन, पण्डित अभिलाष शास्त्री, पण्डित अमित शास्त्री, पण्डित समकित शास्त्री एवं पण्डित शौर्य शास्त्री का सहयोग मिला।

झण्डारोहण श्री गुलाबचन्दजी जैन पोरवाल ने किया। इस प्रसंग पर **भगवान महावीरस्वामी** की प्रतिमा श्री पारसचन्दजी हरकचन्दजी परिवार, **भगवान शांतिनाथ** की प्रतिमा श्री सूरजमलजी रतनबाई परिवार एवं **भगवान पार्श्वनाथ** की प्रतिमा डॉ. संतोष जैन परिवार ने स्थापित की।

महोत्सव को सफल बनाने में फैडरेशन के पदाधिकारी एवं कार्यकर्त्ता श्री तेजमल जैन, जिनेन्द्र जैन, अजय जैन, रमेशचन्द जैन, पारसचन्द पोरवाल, वेदप्रकाश जैन, लाभचन्द पटवारी, महावीर पटवारी, ओमप्रकाश जैन, नरेन्द्र गर्ग, शुद्धात्म जैन, अकलंक जैन, विजय लुहाडिया आदि का योगदान रहा। कार्यक्रम का कुशल संयोजन चिन्मय जैन ने किया। ह्न **जिनेन्द्र जैन**

कहाँ और कब से ?

जो जिनमन्दिर, मुमुक्षु मण्डल और युवा फैडरेशन की शाखायें अपने यहाँ डॉ. भारिल्ल कृत **ज्ञायकभावप्रबोधिनी टीका सहित समयसार** सामूहिक स्वाध्याय (प्रवचन) में आरम्भ करना चाहते है; प्रबुध्द श्रोताओं के हाथ में भी उक्त ग्रन्थ रहें – इस भावना से श्रीमती गुणमाला भारिल्ल धर्मपत्नी डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल उन्हें उक्त ग्रन्थ की 20 प्रतियाँ ससम्मान भेंट करना चाहती हैं।

आप कहाँ (स्थान) और कब (दिनांक) से स्वाध्याय आरम्भ करेंगे ह्न इस जानकारी के साथ तत्काल लिखें अथवा सूचित करें, जिससे आपको समय के पूर्व ही उक्त ग्रन्थ उपलब्ध कराये जा सकें। ह्न **प्रचार विभाग,** पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट,
ए-4, बापूनगर, जयपुर -302015; फोन-(0141)2705581, 707458; ई-मेल : ptstjaipur@yahoo.com